जन्म शताब्दी पुस्तक माला-३

अपने ब्राह्मण एवं संत को जिंदा रखें

— श्रीराम शर्मा आचार्य

अपने ब्राह्मण एवं संत को जिंदा रखें

देवियो! भाइयो!!

आप में से अधिकांश व्यक्ति सोच रहे होंगे कि मैं यहाँ था, परंतु व्याख्यान क्यों नहीं दिया? विशेष कारणवश व्याख्यान न दे सका। बेटे! मैं अपने जीवनभर प्रयोग करता रहा हूँ। कौन-कौन से प्रयोग किए हैं?

पहले ब्राह्मण बनने का प्रयोग किया कि ब्राह्मणत्व के क्या-क्या चमत्कार हो सकते हैं? मैंने उसे अपने जीवन में धारण करके देखा है और पाया है कि इसमें सफलताएँ भी हैं तथा चमत्कार भी हैं। ब्राह्मण जीवन किसे कहते हैं? किफायतसारी जीवन को कहते हैं। ब्राह्मण उसे कहते हैं जो अपना खरच कम से कम में चला सकता हो तथा अधिक से अधिक अपना धन, अक्ल, मेहनत, समाज

में लगा सकता है, जिससे उसके जीवन का लक्ष्य, समाज का लक्ष्य पूरा होता हो। जिस आदमी के पास कुछ बचता ही नहीं है, वह समाज को क्या देगा?

हमें यह कहना होगा कि अध्यात्मवादी बनने के लिए किफायतसारी बनना होगा, ब्राह्मण बनना होगा, हमने इसका प्रयोग किया है तथा लाभ पाया है। हमने अपना खाने-पीने तथा रहने का ढंग ब्राह्मण का रखा है। अपने जमीन के बाबत जो कुछ हमें मिला था, उसे गायत्री तपोभूमि के लिए दान कर दिया। मैंने अपनी पत्नी से पेशवा ब्राह्मणों की उपमा देते हुए कहा कि आपको भी यह जीवन जीना चाहिए। पेशवा के राम टांक ने अपने गुरु की पत्नी के आदेश पर सब कुछ दे दिया था। इन्होंने भी अपने सारे गहने गायत्री तपोभूमि के लिए लगा दिए। पैसों की दृष्टि से हम खाली हाथ हो गए, परंतु शक्ति बहुत मिल गई।

मित्रो! धन की और बल की शक्ति नहीं होती है। वह ब्राह्मणत्व की शक्ति होती है। यह मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ। मैं ब्राह्मण था और अब भी ब्राह्मण हूँ। जो कुछ भी आप देख रहे हैं, यह ब्राह्मणत्व का चमत्कार है। इस दुनिया में मित्रो, एक ही बिरादरी रह गई है जिसका नाम बनिया है। बाकी सारी बिरादरी मर गई हैं—एक ही जिंदा है वह है बनिया। सारे के सारे क्षेत्र में बनिया ही बनिया छाया है। ब्राह्मण कहीं नहीं। परंतु हम ब्राह्मण हैं, इस पर हमें गर्व है तथा संतोष है। अगर कोई अपने को ब्राह्मण बना सकता हो, अपने खरच और लागत को कम कर सकता हो तथा नीयत में ब्राह्मणत्व है तो हमें प्रसन्नता होगी, परंतु आपकी नीयत में तो चांडाल बसा हुआ है। आदमी को गरीब भी होना पड़ेगा, यह हमने ब्राह्मण का प्रयोग करके देखा है।

दूसरा वाला प्रयोग हमने किया–साधु का, जिसका नाम तपस्वी है। हमने अपने सारे छिद्रों को बंद कर दिया। यह दूसरा कदम है। काँटे पर चलने वाले का नाम तपस्वी नहीं है। ठंढे पानी से नहाने वाले का नाम तपस्वी नहीं है। उस आदमी का नाम साधु और तपस्वी है, जिसने अपने आप को तपाया, उसका नाम तपस्वी है, उसका नाम साधु है। हमने अपने आप को तपाया है। अक्ल की दृष्टि से आदमी से ज्यादा बेईमान, बहुरूपिया कोई नहीं है। हमने अपनी अक्ल को ठीक कर लिया है। आप भी मारे डंडों से अपनी अक्ल को ठीक करें। हमने अपनी हर चीज को तपाया, भीतर वाले हिस्से को भी तपाया। हमने अपने हर चीज को तपाया, भीतर वाले हिस्से को भी तपाया। हमने अपने मन को, बुद्धि को तपाया है, पर आपकी बुद्धि तो ऐसी चांडाल है, ऐसी पिशाचनी

है कि क्या कहें? किसी के जिंदगी की समस्या को हल करने का सवाल था तो आपकी अक्ल, आपकी बुद्धि ने ऐसी मक्कारी की कि क्या कहना? पैसे से लेकर समय तक हमने केवल समाज के लिए खरच किया। यह कसा हुआ जीवन हमारा तपस्वी का जीवन है। मंत्रों में शक्ति है, गलत बात नहीं है। देवताओं में शक्ति है, यह भी गलत नहीं है, किंतु, अगर कोई आदमी तपस्वी है तो वह हर काम को कर सकता है। अपने अनुष्ठान काल में हमने किसी से बात नहीं की, कोई भी अन्य चीज नहीं खाई। जौ की रोटी एवं छाछ, बस यही दो चीजें हम खाते रहे।

जैसे हमने अनुष्ठान खतम किया कि एक व्यक्ति आए जो नकली रेशम बनाते थे, उन्होंने कहा कि हम आपको गुरु बनाएँगे। उन्होंने सवा रुपया हमारे हाथ पर रखा। इस पर हमने सोचा कि

तब तो हम ब्राह्मण नहीं हो सकते हैं, हम मजदूर हैं। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण को तो लेना चाहिए। यह आज से लगभग ३५-४० साल पहले सन् १९४५-४६ की बात है, उस सज्जन को लेकर हम बाजार गए। उस जमाने में ठंढी में बिछाने के लिए पुराने कपड़ों के तथा रूई की हाथ से बनी दरियाँ दो रुपए में मिलती थीं। उससे वहीं चीजें खरीदकर जरूरतमंदों में बाँट दी, पर अपने लिए हमने उसे स्वीकार नहीं किया। हमारी अक्ल एवं जो भी चीज हमारे पास थी, उसे हम हमेशा बाँटते चले गए। उस आदमी ने कुछ दिनों के बाद हमारे पास दो सौ रुपए भेजे। हमने उसे गायत्री तपोभूमि के मंदिर बनाने में लगा दिया। यह वह पहला आदमी था जिसने हमें पैसा भेजा था। यह घटनाएँ सुना रहा हूँ मैं आपको अपने तपस्वी जीवन की। इसी तरह हमारे सारे

कार्य होते चले गए। कोई काम हमारा रुका नहीं।

एक प्रयोग वाणी के संयम का हम सुनाते हैं आपको। हम चाहते थे कि हम मौन धारण कर लें तथा बैखरी वाणी का प्रयोग कम करें। हमने जितना व्याख्यान दिया है, दुनिया में शायद ही किसी व्यक्ति ने व्याख्यान दिए होंगे। हमारे व्याख्यानों में लोगों के कायाकल्प हो गए जैसे रामकृष्ण परमहंस के व्याख्यान से हुआ था। लेकिन जो लोग रीछ का तमाशा, रीछ का व्याख्यान सुनने आए, उनको कोई फायदा नहीं हुआ। जिन लोगों को हम व्याख्यान देते हैं, उसे सूँघकर जब देखते हैं, चखकर के देखते हैं कि आदमी कैसा है? घटिया है या वजनदार? तो वे हमें छोटे-छोटे आदमी घटिया आदमी दिखाई पड़ते हैं। हमें वजनदार आदमी दिखाई नहीं पड़ते हैं। वजनदार आदमी माने सिद्धांतों के आदमी। सिद्धांतों को सुनने वाले, मानने

वाले, उस पर चलने वाले, सिद्धांतों को जीवन में उतारने वाले कोई नहीं दिखाई पड़ते हैं। लोगों पर गुस्सा न करके अपने पर गुस्सा न करूँ तो क्या करूँ? आपको मालूम है, जब आदमी मरने को होता है तो बहुत से आदमी मिलने आते हैं, बहुत सी शक्ति खरच होती है। कोई कहता है ताऊ जी अच्छे हैं, कोई कहता है कि हमें आशीर्वाद दे दीजिए। इससे बातें करने में बहुत शक्ति खरच होती है। इसमें भीतरी शक्ति बेहद खरच होती है इसलिए हमने विचार किया है हम मिलना बंद कर देंगे। हम अपनी वैखरी वाणी को दूसरे काम में खरच करेंगे। वैखरी वाणी कम हो जाएगी, तब पश्यंती वाणी, मध्यमा वाणी का उपयोग करेंगे ताकि हम ज्यादा काम कर सकें? बिना बातचीत किए ही ज्यादा काम कर सकते हैं तथा वातावरण को गरम कर सकते हैं। बेटे! अरविंद घोष ने, महर्षि रमण ने इस प्रकार

का प्रयोग किया था और सारा हिंदुस्तान गरम हो गया था।

वैखरी वाणी के माध्यम से अनावश्यक शक्तियाँ खरच होती चली जाती हैं। इसलिए मैंने विचार किया कि अब इसका खरच कम करेंगे। भगवान की शक्ति बहुत है, अबकी बार मैंने प्रयोग किया। अब बोलने की बात कम करता जाऊँगा। इस काम में समय कम खरच करता जाऊँगा और लोगों से बातें कम करता जाऊँगा, कारण अधिकांश लोग अपनी राम कहानी लेकर आते हैं। अनावश्यक भीड़ आ जाती है और कहती है कि हमारा मन नहीं लगता, ध्यान नहीं लगता। बेकार की बातें लोग करते हैं, यह नहीं कि मतलब की बातें करें। बेकार की बातें करने में अब हम समय खरच नहीं करेंगे। वाणी से बात नहीं होगी तो क्या आप निष्ठुर हो जाएँगे। नहीं बेटे हमने ब्राह्मण के बाद संत के रूप में कदम बढ़ाया है। संत

उसे कहते हैं, जिसका मन करुणा से लबालब भरा हुआ होता है। जो दाढ़ी बढ़ा लेता है, रँगा हुआ कपड़ा पहन लेता है, ध्यान कर लेता है, उसे संत नहीं कहते हैं। करुणा से भरा हुआ व्यक्ति ही संत कहलाता है। जब तक हम हैं तब तक हम समाज के लिए काम करते रहेंगे।

एक हमारा प्याऊ जो कभी सूखेगा नहीं। जो पसीने से लथपथ हो गए हैं, थक गए हैं, हमारे प्याऊ पानी, हमारी तपस्या में से उनको देते रहेंगे, उन्हें हरा-भरा बनाए रखेंगे। आप, सब लोग हमारे प्याऊ से पानी पी सकते हैं। ब्राह्मण, संत का जीवन चलता रहेगा। हम प्याऊ बंद नहीं कर सकते हैं। हमने एक चिकित्सालय-डिस्पेंसरी खोला है। जो भी दुखी हमारे पास आए, हमने, उसे छाती से लगाया। उसकी बीमारी का, दु:ख का बराबर ख्याल रखा है। संत का काम भाव-संवेदना का है। हमें अपने बच्चों

को खिलाना है, बच्चों की देखभाल करनी है, बच्चों को गुब्बारा बाँटना है, बच्चों के चेहरे पर मुस्कराहट देखनी है। ये चीजें देखकर हमको खुशी होती है। हम बच्चों के स्कूल चलाते हैं। इसका मतलब क्या है? हमारा अस्पताल चलता है, डिस्पेंसरी चलती है। प्याऊ चलाने से क्या मतलब है? यह आध्यात्मिक बात है। यह संत की बातें हैं तो क्या आप संत की दुकान बंद कर देंगे? नहीं, बंद नहीं करेंगे, जब तक हम जिंदा हैं। आगे भी चलता रहेगा।

आप लोगों को हमने कई बार कहा है, हजार बार कहा है कि आपकी जो समस्याएँ हैं, उसे आप लिखकर दें। आप आधा घंटे भी भगवान का नाम नहीं ले सकते हैं। आप कहते हैं कि हम आपके रास्ते पर चल सकते हैं। बेकार की बातें मत कीजिए। तराजू हमारे पास है। हम जानते हैं, हमारा भगवान जानता है कि आप क्या

हैं ? इसलिए हमने इस बार यह कहना शुरू कर दिया है कि आप हमारा समय नष्ट करने के बजाय लिखकर दे जाइए। आप यहाँ न ध्यान करने आते हैं, न पूजा करने आते हैं, न मतलब की बात करने आते हैं, केवल घूमने आते हैं, किराया खरच करते हैं। आप हमें बेअकल समझते हैं। हम आपकी नस-नस जानते हैं। इसलिए हमने वैखरी वाणी से बोलना बंद कर दिया है। हमारे गुरु हम से वैखरी वाणी से नहीं बोलते, पश्यंती वाणी से बोलते हैं, परावाणी से बोलते हैं। आपकी बातों को हमने सुन लिया है और कहा है कि बेकार की रामकहानी कहकर हमारा समय क्यों खराब करते हैं ? हमें राम कहानी से क्या मतलब है, आप मतलब की बात कहिए।

साथियो ! हमारे मौन धारण करने का एक और कारण है। आप यह मत सोचिए कि मैं अपना प्याऊ बंद करने जा रहा हूँ।

हमें बच्चों को खिलाने का शौक है। हमें बच्चों को प्यार करना, उन्हें गुब्बारा देना बहुत प्यारा लगता है। स्वयं घोड़ा बन जाना तथा बच्चों को पीठ पर बैठा लेना तथा घुमाना बहुत प्यारा लगता है।

हम जो भी सहायता आपकी कर सकते हैं, वह अवश्य करेंगे, परंतु आपको भी स्वयं में संवेदना पैदा करनी होगी। हमने कहा है कि आप उपासना करिए, जप करिए ताकि आपको उस समय परा एवं पश्यंती वाणी से दिशा दे सकूँ, अन्यथा मैं अपने मौन की शक्ति प्रेषित करूँगा और आपको नुकसान होगा।

मेरे गुरु के व्याख्यान देने का कार्य बंद हो गया तो क्या उनकी शक्ति कम हो गई? हम नहीं बोल रहे हैं, हमारा गुरु बोल रहा है। आप भी उनकी शक्ति से बोलेंगे। प्रज्ञापुराण जब आप पढ़ेंगे और लोगों को सुनाएँगे तब वह आपकी वाणी

में नहीं, बल्कि मेरे गुरु की वाणी में होगा, जिसमें अधिक ताकत होगी। आपकी वाणी में कोई ताकत नहीं होगी, आप ऐसे ही बकवास करते रहेंगे। हम मौन हो जाएँगे तो हमारी शक्ति बढ़ जाएगी। हमारी परा एवं पश्यंती वाणी की ताकत बढ़ जाएगी। आप मेरी उस वाणी को सुनेंगे तो आपके आँखों में पानी आएगा, भाव-संवेदना जगेगी। इससे हम आपकी सहायता ज्यादा कर सकेंगे।

आप क्या सोचते हैं कि आप लोगों के ऊपर हमारा कोई असर नहीं पड़ता है। यह हमारा मौन ब्राह्मणत्व है। यह तपस्वी की वाणी है। हमने सेवा करने में संत की प्रवृत्ति को जिंदा रखा है, कि हम समाज की सेवा करेंगे। आज व्यक्ति की सेवा ज्यादा है, समाज की सेवा गौण हो गई है।

हमारे मरने के बाद आप देखेंगे कि गुरुजी के मरने के बाद उनका समय, धन,

श्रम किस काम में खरच हुआ है। हमारी शक्ति एवं सामर्थ्य बच्चों को खिलाने में, अस्पताल खोलकर मरीजों की सेवा में खरच हुई है। हमने अभी तक समाज को चालीस प्रतिशत दिया है और लोगों को, दुखियारे को पाँच प्रतिशत दिया है। अब हमारा मन है कि इसका हिस्सा बढ़ाया जा सके। जब हम मौन धारण कर लेंगे तो हमारा ब्राह्मण और जाग जाएगा, उस समय हम व्यक्तियों की भी ज्यादा सेवा कर सकेंगे। ठोस सेवा कर सकेंगे। अभी तक हमारी सहानुभूति का अंश ज्यादा रहा है, सेवा का हिस्सा कम रहा है। हमने सहानुभूति दी है तथा पाई है। अगर हमने किसी की एक किलोग्राम सेवा की है तो उसमें पाँच सौ ग्राम सहानुभूति भी है। उस समय हम साधनसंपन्न एवं समर्थ थे, पर अगले दिनों जब जीवात्मा को हम और ऊपर उठा लेंगे तब हम अधिक सेवा

कर सकेंगे। आपके लिए हमने कुछ किया है या नहीं? इसका सबूत देखना हो तो दृष्टि पसारकर देखिए कि कुछ है, तो आप पाएँगे कि इसी कारण से यह पचास लाख आदमी हमसे जुड़े हैं, अन्यथा इतने आदमी कहाँ से आते? यह हम कहाँ कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ। ५० लाख आदमी हमारे एक इशारे पर खड़े हो सकते हैं। इतने शक्तिपीठ कहाँ से बन गए? ५० लाख मुट्ठियाँ ५० लाख लोगों का एक घंटे का समयदान कुछ मायने रखता है।

हम अपने ब्राह्मण को फिर जिंदा करेंगे। संत दानी होता है। आदमी को दानी बनने के लिए संत बनना होगा। हम ब्राह्मण और संत को पुनः जिंदा करेंगे। ब्राह्मण जमा करता है, संत उसे खरच कर देता है। हमने निश्चय किया है, विचार किया है कि जिंदगी के इन आखिरी क्षणों में अपने ब्राह्मण

एवं संत को साधकर सबके लिए एक मिसाल स्थापित कर दूँ?

क्या हम जिंदगी भर, अपने बीबी-बच्चों को ही खिलाते रहेंगे? जिस पर मनुष्य का भविष्य टिका है, क्या उसके लिए कुछ नहीं कर सकेंगे? अपने लिए अधिक, समाज के लिए इतना कम। यह कैसे होगा? मेरे गुरु ने दुखियारों की सेवा, समाज की सेवा कम की है, परंतु उसने सारे विश्व को हिला दिया है। दूसरों के दुःखों को देखकर यह सोचते हैं कि इसके लिए हम क्या करें? इस समय मैं रो पड़ता हूँ तथा उसे सहायता किए बिना मेरा मन नहीं मानता है। यह क्रम चलेगा ही। परंतु एक काम और है, इनसान को ऊँचा उठाने का। हम सोचते हैं कि और यदि यह काम भी किया होता तो मजा आ जाता। आप जितने लोग बैठे हैं, अगर आपको हम फुटबॉल की तरह ऊँचे उछाल दिए होते तो मजा आ जाता। आप लोगों को उछाल

दें तो आप में से हर आदमी हनुमान, विवेकानंद दिखाई पड़ेगा। आप लोगों में एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो रैदास की तुलना में गरीब हो। परंतु आप इतने भारी हैं कि आपके सेल्स काम नहीं कर रहे हैं, आपके हाथ उठ नहीं पा रहे हैं। मानसिक दृष्टि से एक-एक बेड़ियाँ से एक-एक बेड़ियाँ इतनी भारी हैं जैसे हजार मन की हों। ऐसे में आपको कैसे हटाऊँ? आपकी बेड़ियों को मैं काटूँगा क्योंकि हमारे बाद इन बच्चों को खिलाने वाला, नर्सिंगहोम चलाने वाला कहाँ से लाएँगे? यह अस्पताल बंद हो जाने पर आपके अनुभव के बिना इनका ऑपरेशन कौन करेगा? इनसान को उठाया नहीं जा सका तो बात कैसे बनेगी?

इसी काम के लिए हम समय लगाना चाहते हैं। सवाल हमारे समय का है, आप तो केवल पूजा के पीछे पड़े हैं। देवी-देवता के पीछे लगे हैं कि मनोकामना पूरी हो जाए।

किसी दिन मेरे दिमाग में गुस्सा आ गया हो तो पूजा को ही बंद कर दूँगा और कहूँगा कि इसी के पीछे पड़ा है। पूजा के चक्कर में पड़ा है। पूजा से आज्ञाचक्र जगेगा। सुन लेना एक दिन मैं पूजा को गालियाँ दूँगा, यदि यही रटता रहा कि सब कुछ पूजा से मिल जाएगा और यही समझता रहा कि माला घुमाने को पूजा कहते हैं। देवी-देवता को पकड़ने का नाम पूजा है। अज्ञानी लोग, भ्रमित लोग मनुष्य को दबाने तथा चक्कर में डालने के नाम को पूजा कहते हैं। देवी-देवताओं को पकड़ने के लिए, मनोकामना पूर्ण करने के लिए जो आपने पूजा का स्वरूप बना रखा है, वह बहुत ही घटिया रूप है। पूजा ऐसी नहीं हो सकती, ध्यान ऐसा नहीं हो सकता, जैसा कि आप लोगों ने समझ रखा है कि अगरबत्तियाँ चढ़ाएँगे, चावल चढ़ाएँगे, शक्कर की गोली चढ़ाएँगे और मनोकामना पूर्ण हो जाएगी। इतना घटिया

अध्यात्म नहीं हो सकता है जैसा कि आप लोगों ने सोच रखा है। आपकी पूजा घटिया, आपके देवता घटिया सब घटिया हैं। इसको समझना चाहिए।

हर रोज चिट्ठियाँ आती हैं, हर शाखाओं में मारकाट-मारकाट। मुझे मैनेजर बनाइए, इस मैनेजर को निकालिए। हमने शाखा तथा शक्तिपीठें इसलिए नहीं बनाई थीं, देवता को इसलिए नहीं बैठाया था कि लोगों का अहंकार बढ़े। हमने ट्रस्टी इसलिए नहीं बनाया था कि इसे बरबाद करो। हमने स्वयं गलती की इन लोगों को मालिक, ट्रस्टी बनाकर, इनके अहंकार एवं स्वार्थपरता को आगे बढ़ाकर। अब पंचायत समितियों में जिस प्रकार झगड़ा होते हैं, हमारे शक्तिपीठों में भी हर जगह चांडालपन हैं, हमें क्या दिखता नहीं ? क्या हमने शक्तिपीठें इसीलिए बनाईं थीं, पूजा इसीलिए प्रारंभ की थी, इसलिए संगठन बनाया था कि आप लोग

अहंकारी बन जाइए और आपस में ही एक दूसरे की टाँग-खिंचाई कीजिए, आप ऐसी पूजा को बंद कीजिए, पूजा मत कीजिए, पर यह घटियापन बंद कीजिए। आप नास्तिक हो जाइए, भले ही पर आप इसी तरह के संगठन बनाना बंद कर दीजिए। आप शक्तिपीठों को बनाना बंद कर दीजिए।

यहाँ हम एक बात अवश्य कहेंगे कि आप आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धांतों को समझिए। पूजा को पीछे हटाइए, आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धांतों को समझिए। आप यह मत सोचिए कि गुरुजी ने चौबीस-चौबीस लाख का जप किया था। नहीं, हम और चौबीस लाख के जप करने वालों का नाम बता सकते हैं जो आज बिलकुल खाली एवं छूछ हैं। जप करने वाले कुछ नहीं कर सकते हैं, हम ब्राह्मण की शक्ति, संत की शक्ति जगाना चाहते हैं। आप राम का नाम लें या न लें।

अब तो मैं यहाँ तक कहता हूँ कि अब माला जप करें या न करें, एक माला जप करें या ८१ माला जप करें, परंतु मुख्य बात यह है कि आप अपने ब्राह्मणत्व को जगाइए। प्याऊ को कौन चलाएगा ? हनुमान चालीसा पाठ करने वालों ने कितनों का भला किया है ? ब्राह्मणों ने भला किया है, संतों ने भला किया है ? ब्राह्मणों की वाणी में, संतों की तपस्या में बल होता है। आपको इसी प्रकार कोई मिल जाएगा तो आप नास्तिक हो जाएँगे। आप पूजा का महत्त्व बढ़ाइए। अध्यात्म इन लोगों के द्वारा ही टिका हुआ है।

आपके पास बैंक में धन जमा नहीं है, तो चैक कैसे काट सकते हैं ? आपकी बैंक में पूँजी होनी चाहिए। पहले जमा तो कीजिए कुछ। केवल पूजा से ही काम चलने वाला नहीं है। हमारी सबसे बड़ी पूजा समाज की सेवा है। हमने लाखों आदमियों की ही नहीं,

वरन सारे विश्व की सेवा की है। हमने अपनी अक्ल, धन, अनुष्ठान, वर्चस् सभी इसी में लगाया है। हमने खेती करने वालों, मकान बनाने वालों को देखा है कि सेवा के नाम पर नगण्य हैं।

आप अकेले चलें। हमारे गुरु अकेले चले हैं। हम अकेले चले हैं। आप भी अकेले चलिए। संगठन के फेर में मत पड़िए। आपको बोलना नहीं आता है। आप कहते हैं कि व्याख्यान सिखा दीजिए। आप हैं कौन? हमें बतलाइए। भाषण से क्या होगा? आप हमारी बात मानिए। आपको बोलना नहीं आता है तो हम क्या करें? आप पोस्टमैन का काम करिए। हम बोलना सिखा देंगे। लड़कियों को सिखा दिया था। महाराज जी हमें भी बोलना सिखा दीजिए। आप त्याग करके तो हमें बतलाइए। जवाहरलाल नेहरू एवं शास्त्री जी को गांधी जी ने खादी बेचने को कहा

था। वे घर-घर जाकर खादी बेचते थे। घर-घर धकेल गाड़ी लेकर जाते थे तथा लोगों से कहते थे कि आप खादी पहनिये तो क्या वे खादी बेचते थे? हाँ बेटे खादी बेचते थे।

आप अपने आप को निचोड़िए। ये हमारा बेटा, यह हमारी पत्नी। देखना यही तुझे ऐसा मारेंगे कि तुझे याद रहेगा। हमारा बेटा, हमारी पत्नी-यही रटता रहेगा कि कुछ समाज के लिए, भगवान के लिए भी करेगा। नहीं गुरुजी हम तो हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, गायत्री चालीसा पढ़ते हैं। अरे, स्वार्थी कहीं का, तेरे तो अक्ल खराब हो गई है। अहंकार बढ़ गया है। हमने आप में से हर किसी को कहा है कि आप ब्राह्मण बनिए। नहीं गुरुजी, हमने तो चंदा इकट्ठा कर लिया, तो हम क्या करेंगे इसका? आप आदमी तो बनें पहले आप आदमी बनना सीखें। आप घटियापन

छोड़िए, सुबह से शाम तक काम कीजिए। पात्रता बढ़ाइए।

ऋषियों ने अपने रक्त को एक घड़े में भरा था, जिससे सीताजी उत्पन्न हुई थीं। आपको भी संस्कृति की सीता की खोज करनी है। समाज के लिए, संस्कृति के लिए आप भी अपना समय, अपना पैसा निकालिए, अपना रक्त निकालिए। आप अपने आप को निचोड़िए तो सही। निचोड़ने के नाम पर अँगूठा दिखाते हैं, त्याग के नाम पर जीभ निकालते हैं। बकवास के नाम पर, घूमने के नाम पर बिना मतलब के आडंबर बना रखे हैं। अपने आप को निचोड़िए। आप अपने को यदि निचोड़ेंगे तो फिर देख लेना आप क्या बन जाते हैं? हमने अपने आप को निचोड़ा तो देखिए क्या बन गए?

अगर आपने अपने आप को निचोड़ दिया तो हमारा एक काम जरूर करना

और वह यह कि हमारे विचार-हमारी आग को लोगों तक पहुँचाना। हम लेखक नहीं हैं। हमारे लिखे शब्दों में से आग निकलती है। विचारों की आग, भावनाओं की क्रांति की आग निकलती है। हमारे लेखनी में से निकलती है आग, मस्तिष्क में से निकलती है आग, हमारी आँखों में से निकलती है आग। हमारी विचारणा की आग, भावनाओं की आग, संवेदनाओं की आग को आप घर-घर पहुँचाइए। आप में से हर आदमी को लालबहादुर शास्त्री, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल होना चाहिए। गांधीजी के आदेश पर वे खादी धकेल पर रखकर बेचने गए थे।

ईसाई मिशन की महिलाएँ भी घर-घर जाती हैं और यह कहती हैं कि हमारी एक पैसा की किताब जरूर खरीदिए। अगर अच्छी न लगे तो कल मैं वापस ले लूँगी। अरे यह किताब बेचना नहीं है बाबा, मेरे

विचार को घर-घर पहुँचाना है। आप लोगों के जिम्मे हमारा एकसूत्रीय कार्यक्रम है। आप जाइए अपने को निचोड़िए। आपका घर का खरच यदि १००० रुपए है तो निचोड़िए इसको और उसमें से बचत को ज्ञानयज्ञ के लिए खरच कीजिए। हमारी आग को बिखेर दीजिए, वातावरण को गरम कर दीजिए, उससे अज्ञानता को जला दीजिए। आप लोग जाइए और अपने आप को निचोड़िए। ज्ञानघट का पैसा खरच कीजिए तो क्या हम अपनी बीबी को बेच दें? बच्चे को बेच दें? चुप कंजूस कहीं के ऊपर से कहते हैं हम गरीब हैं। आप गरीब नहीं कंजूस हैं।

हर आदमी के ऊपर हमारा आक्रोश है। हमें आग लग रही है और आप निचोड़ते नहीं है। इनसान का ईमान, व्यक्तित्व समाप्त हो रहा है। आज शक्तिपीठें, प्रज्ञापीठें जितनी बढ़ती जा

रही हैं, उतना ही आदमी का अहंकार बढ़ता जा रहा है। आपस में लड़ाई-झगड़े बढ़ते जा रहे हैं। सब हविश के मालिक बनते जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि अब पंद्रह-बीस हजार में फूस के शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ बन जाते तो कम से कम लोगों का राग-द्वेष, अहंकार तो नहीं बढ़ता। आज आप लोगों से एक ही निवेदन कि आप हमारी आग स्वयं बिखेरिए, नौकरी से नहीं, सेवा से। आप जाइए एवं हमारा साहित्य पढ़िए तथा लोगों को पढ़ाइए और हम क्या कहना चाहते थे। हम दो ही बातें आपसे कहना चाहते हैं—पहली हमारी आग को घर-घर पहुँचाइए, दूसरी ब्राह्मण एवं संत को जिंदा कीजिए ताकि हमारा प्याऊ एवं अस्पताल चल सके ताकि लोगों को अपने बच्चों को खिला सकें तथा उन्हें जिंदा रख सकें तथा मरी हुई संस्कृति

को जिंदा कर सकें। आप ११ माला जप करते हैं—आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। यह जादूगरी नहीं है। किसी माला में कोई जादू नहीं है। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनोकामना की मालाएँ, जादूगरी की माला में आग लगा दीजिए, आप मनोकामना की माला, जादूगरी की माला, आज्ञाचक्र जाग्रत करने की माला को पानी में बहा दीजिए।

तो क्या करें महाराज जी? आप अपने ब्राह्मणत्व को जगा दीजिए, साधु को जगा दीजिए ताकि आप अपनी नाव स्वयं पार कर सकें, अन्यथा हम यही कहेंगे कि शायद हमारा तप कम है नहीं तो कहीं न कहीं हमें ब्राह्मण, साधु मिल ही जाते। आपके पास धन नहीं तो अपनी भावना, विचार, श्रद्धा तो समाज में बिखेर ही सकते हैं। वही बिखेरिए, संत बनकर अपना परिचय दीजिए। संत दानी होता है, संत उदार होता है।

हमारा मन था कि अपने बचे हुए शेष दिनों में ब्राह्मण तथा संत का काम अधिक से अधिक कर सकूँ। लोगों की मध्यमा वाणी से, परावाणी से अधिक से अधिक सेवा कर सकूँ। यह हमारा मन है, मैं आप को एक ही बात कह सकता हूँ कि आप अपने को निचोड़िए, बचत कीजिए--आपके श्रम, समय, धन और विचारणा-भावना की समाज को जरूरत है, संस्कृति को जरूरत है। इसे विलासिता में खरच मत कीजिए। अगर किसी में ब्राह्मणत्व एवं संत जिंदा है तो उसे निचोड़िए। उसे आप बिखेर दीजिए। हमने प्रार्थना की है कि यदि आप लोगों में कहीं भी किसी भी कोने में यदि ब्राह्मणत्व या संत जिंदा हो तो वह जग जाए। उपासना-साधना के नाम पर आप जादूगरी बंद कीजिए। देवता को गुमराह करने वाली, मनोकामना सिद्ध करने वाली पूजा बंद कीजिए।

साधना किसे कहते हैं आपको मालूम नहीं ? आप हनुमान जी की पूजा करते हैं, संतोषी माता की पूजा करते है। यह मंत्र है, न यंत्र है, न पूजा है। आप हनुमान जी या संतोषी माता को साधते हैं। अरे पहले अपने आप को तो साधिए न, पर यह जो जादूगरी आप करते हैं, वह बदमाशी के सिवा कुछ नहीं है। अगर आप पूजा-उपासना करते हैं, तो ठीक, यह आपकी मरजी है, पर यह न तो कोई मंत्र जप है, न भजन है, यह मात्र धूर्तगीरी है। पूजा के नाम पर यदि आप ऐसी बदमाशी करते हैं तो आपकी मरजी, पर इससे कुछ होने वाला नहीं है। पहले आप समर्पण करना सीखिए, यह मोटी-मोटी बातें थीं जो हमने किसी तरह से आपसे कह दीं।

हमारे गुरुजी की यही मरजी है कि हम आप में से हर आदमी में से ब्राह्मण तथा संत को जिंदा करें और हम यही

चाहते हैं कि अगर हमारे अंदर बल हो तथा आपके अंदर ब्राह्मणत्व तथा साधु हो तो वह जिंदा हो जाए। इस विदाई के अवसर पर यही कहकर हम आप लोगों को विदा कर रहे हैं। मित्रो, गुरुजी ने हमेशा दिया है, आगे भी देते रहेंगे। शर्त एक ही है कि आप अपनी ब्राह्मण तथा संत की प्रवृत्ति जिंदा करें। आप जाइए एवं अपने-अपने कामों में जुट जाइए।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा ।